P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-IV*December-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

पर्यटन उद्योग की अवधारणा एवं उत्तर प्रदेश के पर्यटन उद्योग में रोजगार की संभावनाओं का अध्ययन

प्रदीप कुमार गर्ग
एसोसिएट प्रोफेसर,
कॉमर्स विभाग,
एम. एम. कॉलेज
मोदी नगर, उ0प्र0

सारांश

पर्यटन उद्योग भारत के तीव्र गति से विकसित होते उद्योगों में से एक है तथा राष्ट्र के लिये विदेशी मुद्रा अर्जित करने का एक प्रमुख माध्यम है। सूचना एवं प्रकाशन मंत्रालय द्वारा प्रकाशित भारत, 2014 के अनुसार, भारत में पर्यटन उद्योग की वार्षिक वृद्धि दर 13.5 प्रतिशत से अधिक है, जोकि सम्पूर्ण विश्व के पर्यटन उद्योग की वार्षिक वृद्धि दर 4.5 से लगभग 3 गुणा अधिक है। यह भारत में पर्यटन उद्योग के उज्जवल भविष्य को इंगित करती है तथा इससे यह भी स्पष्ट होता है कि पर्यटन उद्योग का भारत की राष्ट्रीय आय में भी एक महत्वपूर्ण योगदान है।

पर्यटन उद्योग की तीव्र वृद्धि दर तथा इसके विस्तार की असीम संभावनाओं को देखते हुये यह आवश्यक प्रतीत होता है कि भारत सरकार द्वारा पर्यटन उद्योग के निर्बाध विकास के लिये यथासंभव प्रयास किये जायें। वर्तमान समय में भारतीय पर्यटन उद्योग की प्रमुख समस्यायें पर्यटन क्षेत्र के सुनियोजित विकास के लिये सुसंगठित ढ़ाँचें का अभाव, अविकसित पर्यटन क्षेत्र तथा पर्यटन क्षेत्र में कुशल मानव संसाधन की कमी आदि है। इनमें से सर्वाधिक महत्वपूर्ण समस्या कुशल मानव संसाधन के अभाव की है, क्योकि पर्यटन उद्योग मूल रूप से मानव संसाधन पर आश्रित उद्योग है।

सामान्यतः पर्यटक अपनी उबाऊ दैनिक जीवनचर्या में कुछ समय के लिये परिवर्तन करने हेतु पर्यटन पर जाते हैं, जहाँ पर वे शारीरिक एवं मानसिक कष्टों से मुक्त आरामदायक क्षणों के आकांक्षी होते हैं तथा इसके लिये धन व्यय करने को तत्पर रहते हैं। पर्यटकों की इस मनोकामना को पूर्ण करने के लिये पर्यटन केन्द्रों पर बड़ी संख्या में मानव संसाधन की आवश्यकता होती है, जोकि पर्यटकों के मनोनुकूल वातावरण का निर्माण करते हैं तथा उनकी सुविधा के लिये यथासंभव सेवाकार्य करने के लिये तत्पर रहते हैं। इसके अतिरिक्त कुशल मानव संसाधन के द्वारा पर्यटन क्षेत्र में उपलब्ध अन्य संसाधनों का समग्र रूप से समुचित विदोहन कर पाना भी संभव है।

इस प्रकार पर्यटन उद्योग न केवल राष्ट्रीय आय में वृद्धि का माध्यम है वरन् इसके द्वारा बड़ी मात्रा में रोजगार सृजन किया जाना भी संभव है। उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक महत्व तथा यहाँ के विभिन्न शहरों के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखते हुये यहाँ पर पर्यटन उद्योग के विकास की असीम संभावनायें दिखायी देती हैं तथा इस क्षेत्र में रोजगार सृजन के भी पर्याप्त अवसर प्रतीत होते हैं, इसके लिये केवल कुशल नियोजन तथा दृढ़ इच्छा शक्ति की आवश्यकता है। यद्यपि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा इस दिशा में पर्याप्त प्रयास किये भी गये है परन्तु अभी भी उत्तर प्रदेश पर्यटन उद्योग की रोजगार उत्पादक क्षमता के पूर्ण विदोहन के लिये बहुत कुछ किया जाना संभव है।

मुख्य शब्द : पर्यटन उद्योग, रोजगार के अवसर

प्रस्तावना

पर्यटन उद्योग की अवधारणा

पर्यटन उद्योग से तात्पर्य किसी भी पर्यटन स्थल पर आये पर्यटकों को सुविधा प्रदान कर उनसे आय प्राप्त करना है। यहाँ आय प्राप्त करने से आशय सरकार द्वारा मुख्यतः लाभ कमाना नहीं होता क्योंकि यह तो एक गौण कार्य है, किन्तु पर्यटकों से धन लेने का मुख्य कारण उस पर्यटन स्थल की साज–सज्जा एवं व्यवस्था को बनाये रखने के लिये धन की व्यवस्था करना होता है। पर्यटन उद्योग के अन्तर्गत इस बात का भी विशेष ध्यान रखा जाता है कि जो सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहरें हैं उन्हें किसी तरह की क्षति पहुँचे बिना देशी एवं विदेशी पर्यटकों को देश की संस्कृति एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की पूर्ण

जानकारी प्राप्त हो सके। किसी भी पर्यटन स्थल पर सरकार द्वारा पर्यटकों से जो भी धन कर अथवा शुल्क के रूप में वसूला जाता है वह तो वहाँ के रखरखाव को देखते हुए नाम–मात्र का ही होता है किन्तु उस पर्यटन स्थल की वजह से वहाँ के आस–पास के लोगों तथा स्थानीय निवासियों को रोजगार भी प्राप्त होता है।

राष्ट्रीय आर्थिक विकास में पर्यटन उद्योग का महत्व

किसी राष्ट्र के राष्ट्रीय आर्थिक विकास में पर्यटन उद्योग का विशेष महत्व होता है। देश के लाखों लोग प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से इस उद्योग के माध्यम से रोजगार प्राप्त करते हैं। देश को अर्जित विदेशी पूंजी का एक बड़ा भाग पर्यटन द्वारा ही प्राप्त होता है। जो भी राष्ट्र अपने आप में पर्यटन योग्य क्षमता रखता है उसके आर्थिक विकास में पर्यटन उद्योग की एक सशक्त भूमिका होती है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण यूरोप के बीचोंबीच बसा बहुत छोटा सा देश स्विट्जरलैंड है जो कि सभी बड़े देशों से जुड़ा है। यहाँ की तस्वीर सी दिखने वाली पहाड़ियाँ, हरे–भरे बाग–बगीचे, खूबसूरत झीलें और आकाश को छूते पर्वतीय शाखरों की सुंदरता पर्यटकों तथा फिल्म व्यवसाय से जुड़े व्यक्तियों को बार–बार अपनी ओर आकर्षित करती है। इस देश के राष्ट्रीय आर्थिक विकास का मुख्य आधार ही पर्यटन उद्योग है।

भारतीय पर्यटन उद्योग एवं रोजगार सृजन

भारतीय पर्यटन उद्योग की अवधारणा को यदि सामान्य शब्दों में व्यक्त किया जाये तो कहा जा सकता है कि यह एक ऐसा उद्योग है जिसमें पर्यटन के माध्यम से आय उत्पन्न हो रही है। लेकिन यदि भारतीय पर्यटन उद्योग को विस्तृत रुप में विश्लेषण किया जाये तो पता चलता है कि यह देश का ऐसा उद्योग है जिस पर देश के लाखों परिवारों की आजीविका निर्भर है। एक मात्र यह ही उद्योग ऐसा है जो कि अन्य राष्ट्रों के लोगों को हमारी सभ्यता, संस्कृति, प्राकृतिक सौन्दर्य, अखण्डता तथा अनेकता में एकता के दर्शन कराता है। भारतीय पर्यटन उद्योग राष्ट्रीय आय के स्रोतों का एक प्रमुख साधन है तथा विदेशी मुद्रा को एकत्रित करने में सहायक है। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की लोचपूर्ण व्यवस्था को नियन्त्रित करने में पर्यटन उद्योग का विशेष महत्व है।

भारतीय पर्यटन उद्योग की वर्तमान स्थिति

भारतीय पर्यटन उद्योग की वर्तमान स्थिति का यदि आकलन किया जाये तो सन् 1980 के पश्चात् यहाँ पर्यटन के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास हुआ है। इसके मुख्य कारणों में यहाँ स्थित समुद्री सुहावना तटीय भाग, सांस्कृतिक विरासत, हस्त शील्प सामग्री, धार्मिक स्थल, योग, आयुर्वेद, सदाबहार वन, प्राकृतिक स्वास्थ्यप्रद वातावरण तथा शीतल ग्लेशीयर इत्यादि तो हैं ही; साथ ही भारतीय सरकार द्वारा इस उद्योग को बढ़ावा देने के लिये उठाये जाने वाले कदमों ने भी पर्यटन उद्योग को प्रमुख उद्योगों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया है।

आज घरेलू पर्यटकों की संख्या में भी वृद्धि हुई है। सन् 1951 में भारत में आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या 17 हजार थी जो 1998 में 2.36 मिलियन, 1999 में 2.48 मीलियन, 2000 में 2.64 मीलियन और 2001 में 2.7 मीलियन तक बढ़ गयी। इसके कारण विदेशी मुद्रा के आयात में भी वृद्धि हुई। जहाँ यह 1999 में यह 13041.81 करोड़ रुपये थी वहीं 2001 में 14408.63 करोड़ रुपये हो गई। इस समय संयुक्त किंग्डम (U.K.) के वासी भारत में सर्वाधिक आते रहे हैं। इनकी संख्या 2000 में 354217 थी। अन्य देशों के आगन्तुक पर्यटकों की संख्या भारत में इससे कम रही। इनमें भी 4.9 प्रतिशत यात्री भारत भ्रमण हेतु आए जबकि दूसरे कारणों से 3.1 प्रतिशत ही आए थे। यहाँ की सांस्कृतिक सम्पदा को संरक्षित रखने हेतु South Asia Travel and Tourism Exchange (STATE) तथा Indian National Tourist for Art & Culture (INTAC) ने पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु उपहार देने की योजना बनायी थी जो इस समय चल रही है।

उपरोक्त आंकड़ों के अतिरिक्त यदि व्यवहारिक रूप में देखा जाये तो भारतीय पर्यटन उद्योग की वर्तमान स्थिति का आकलन इन्हीं उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि हिमालय क्षेत्र, जहाँ कभी सन्नाटा पसरा रहता था वर्तमान में वहाँ पर्यटकों के दृष्टिगत बड़े–बड़े भवनों के निर्माण, सुविधाओं की व्यवस्था, सुरक्षा के प्रबन्ध आदि होने के कारण वह क्षेत्र जीवन्त हो उठा है। इसी प्रकार कश्मीर की घाटी भी जहाँ सर्दियों से बर्फ गिरने के कारण कभी वहाँ के निवासी अपना आवास छोड़कर नीचे आ जाते थे, आज वहाँ देशी एवं विदेशी पर्यटक स्कीइंग के लिये जाते हैं जिस कारण वहाँ के स्थानीय निवासियों के साथ–साथ पर्यटन उद्योग से जुड़े अन्य व्यक्तियों को भी आर्थिक लाभ प्राप्त होता है। जल–क्रीड़ा को पसन्द करने वाले पर्यटकों का ध्यान रखते हुये आज सरकार ने कई स्थानों, जैसे– लखनऊ, चिलका झील, नागार्जुनी सागर, विजयवाड़ा, पाण्डीचेरी, लक्षद्वीप इत्यादि में जल क्रीड़ा केन्द्र खोल दिये हैं जो पर्यटन उद्योग की आय का मुख्य स्रोत बन गये हैं। पर्वतारोहण, हाथी पर बैठकर खुले जंगल की सैर करना अथवा विभिन्न क्षेत्रों की लोक कलाओं और लोक संस्कृति की जानकारी लेना हो तो वर्तमान समय में पर्यटन उद्योग के विकास के कारण सब सम्भव है।

उपरोक्त के अतिरिक्त छोटे–2 पर्यटन केन्द्रों पर केन्द्र अथवा राज्य सरकारों ने टूरिस्ट कार्यालय खोल रखे हैं। प्रत्येक राज्य के केन्द्रों में बड़े शहरों तथा विकसित स्थलों पर भी ये कार्यालय स्थापित किये गये हैं। इन कार्यालयों में यात्रा सम्बन्धी पुस्तकें, विवरण विश्रामगृह (कुछ ही कार्यालयों में) इत्यादि उपलब्ध होने के साथ–2 यहाँ के कर्मचारी भी पर्यटकों को सहयोग प्रदान करते हैं।

भारतीय पर्यटन उद्योग वैसे तो विकास की गति पकड़ चुका है किन्तु चूँकि यह एक सेवा उद्योग भी है इसलिये केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार दोनों को ही इसके समुचित विकास की ओर ध्यान देना चाहिये, तभी विश्व पर्यटन परिदृश्य में भारत का व्यक्तित्व उभर कर सामने आ सकेगा।

शोध – अध्ययन का महत्व

पर्यटन उद्योग भारत के तीव्र गति से विकसित होते उद्योगों में से एक है तथा राष्ट्र के लिये विदेशी मुद्रा अर्जित करने का एक प्रमुख माध्यम भी है। सूचना एवं प्रकाशन मंत्रालय द्वारा प्रकाशित भारत, 2007 के अनुसार, भारत में पर्यटन उद्योग की वार्षिक वृद्धि दर 13 प्रतिशत से अधिक है जो कि सम्पूर्ण विश्व के पर्यटन उद्योग के

उज्जवल भविष्य की ओर इंगित करती है। सन् 2005 तक विश्व पर्यटन उद्योग में भारत की भागीदारी 0.49 प्रतिशत थी जिसके माध्यम से उस वर्ष भारत द्वारा 25,172 करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा का अर्जन किया गया। इससे स्पष्ट होता है कि पर्यटन उद्योग का भारत की राष्ट्रीय आय में भी एक महत्वपूर्ण योगदान है। इस प्रकार पर्यटन उद्योग न केवल राष्ट्रीय आय में वृद्धि का माध्यम है वरन् इसके द्वारा बड़ी मात्रा में रोजगार सृजन किया जाना भी संभव है। उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक महत्व तथा यहाँ के विभिन्न शहरों के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखते हुए यहाँ पर पर्यटन उद्योग के विकास की असीम संभावनायें दिखायी देती हैं तथा इस क्षेत्र में रोजगार सृजन के भी पर्याप्त अवसर प्रतीत होते हैं। इसके लिये केवल कुशल नियोजन तथा दृढ़ इच्छा–शक्ति की आवश्यकता है। यद्यपि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा इस दिशा में पर्याप्त प्रयास किये भी गये हैं परन्तु अभी भी उत्तर प्रदेश पर्यटन उद्योग की रोजगार उत्पादक क्षमता के पूर्ण विदोहन के लिये बहुत कुछ किया जाना सम्भव है।

उत्तर प्रदेश के पर्यटन उद्योग का संगठनात्मक ढांचा

उत्तर प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत में पांचवा स्थान रखता है तथा पर्यटन के सन्दर्भ में यह एक समृद्ध प्रदेश है। पर्यटन उद्योग इस प्रदेश की आय के प्रमुख स्रोतों में से एक है। जब यहाँ पर्यटन इतना विकसित नहीं था तब इसका अपना कोई संगठनात्मक स्वरूप नहीं था तथा यह वित्त मंत्रालय का ही एक भाग था। जब यहाँ पर्यटन व्यवसाय का विस्तारीकरण होने लगा तथा यह राज्य की एक प्रमुख आय के स्रोत के रूप में उभर कर सामने आया तब सरकार द्वारा इसको अधिक स्वतन्त्र और विकसित बनाने के लिये इसका अलग मंत्रालय बना दिया गया जिसको पर्यटन मंत्रालय के रूप में पहचान मिली।

आज पर्यटन एक व्यवसाय बन चुका है। व्यवसाय का दर्जा प्राप्त करने के बाद आवश्यक है इसको विकसित करना। यह तभी विकसित किया जा सकता है जब इसको एक व्यवस्थित प्रबन्धतंत्र द्वारा नियन्त्रित रखा जाये। अतः पर्यटन में प्रबन्धन की विशेष भूमिका होती है। इसी के द्वारा पर्यटन के आय–व्यय को एक सम स्थिति में नियोजित करते हैं कि कम से कम व्यय करके अधिक से अधिक लाभ प्राप्त हो किन्तु अधिक प्राप्ति के लिए बड़ी संख्या में पर्यटकों का आना आवश्यक है। उनको बुलाने के लिए यह आवश्यक है कि विपणन का सिद्धान्त और व्यवस्था ऐसी निर्धारित की जाये की अपेक्षित लक्ष्यों की प्राप्ति हो सके। सिद्धान्तों को तय करने के बाद उन घटकों को जो इसमें लगे हैं उनको नियंत्रित करना आवश्यक होता है। ये घटक हैं– यातायात के स्रोत, ठहराव और भोजन की व्यवस्था, प्रचार–प्रसार के माध्यम, इनमें लगे लोगों का प्रशासन, इनको व्यवस्थित रूप से संगठित करना, इनके सम्बन्ध में सरकारी तथा अन्तर्राष्ट्रीय नीतियां और नियम बनाना, पर्यटन को संगठित रूप देना जिसके लिए क्लब, संघ संस्थान आदि को व्यवस्थित करना, देश में पर्यटन संगठनों और विभाग को व्यवस्थित करना आदि। इन्हीं के सहारे पर्यटन का भविष्य बनता है। इसलिए प्रत्येक राज्य की सरकारों को पर्यटन में प्रबंधन पर विशेष बल देना चाहिए।

उत्तर प्रदेश के पर्यटन उद्योग की वर्तमान स्थिति

उत्तर प्रदेश सांस्कृतिक, कलात्मक, धार्मिक ऐतिहासिक एवं राजनैतिक सम्मिश्रण की एक ऐसी स्थली है जो हमारे देश को आज भी गौरान्वित करती है और भविष्य में भी करती रहेगी। परन्तु राज्य सरकार का यह दुर्भाग्य ही रहा है कि पर्यटकों को आकर्षित करने वाले इतने साधनों की मौजूदगी के बावजूद भी यहां पर्यटन का पर्याप्त विकास अब तक नहीं हो पाया है। पर्यटन के राज्य में विकसित नहीं हो पाने के अनेक कारण हैं।, जैसे कि सरकार ने इसे विकसित करने की दिशा में आरम्भ में कोई ठोस कदम नहीं उठाया, बल्कि यह कहें कि इसकी अनदेखी ही कर दी गयी। इसके अतिरिक्त यहां के कई पर्यटन–स्थल अभी भी परिवहन की सुचारू व्यवस्था से नहीं जुड़े हैं और पर्यटन स्थलों के समीप पर्यटकों के विश्राम और अन्य सुविधाओं की आपूर्ति भी उपलब्ध नहीं है। ऐसी स्थिति में पर्यटन का पर्याप्त विकास सन्देहास्पद ही है।

सातवीं पंचवर्षीय योजना में पर्यटन पर पर्याप्त ध्यान दिया गया और इसे उद्योग का दर्जा प्रदान करने, हस्तशिल्पों की बिक्री तथा राष्ट्रीय सद्भाव बढ़ाने में इसके योगदान की संभावनाओं का पता लगाने की बात कही गयी। योजना के मसौदे में कुछ खास पर्यटक सर्किट विकसित करने, गैर पारम्परिक क्षेत्रों में पर्यटन का विस्तार करने और वन्यजीव विहार और अन्य जोखिम पूर्ण क्षेत्रों में पर्यटन की शुरूआत पर बल दिया गया। इस योजनाकाल मे विदेशों में भारतीय पर्यटन की संभावनाओं का प्रचार करने के संबंध में भी विस्तार से चर्चा की गयी। आठवी पंचवर्षीय योजना के क्रियान्वयन के समय चार बातों पर विशेष बल दिया गया– पर्यटन को अधिक रोजगार जुटाने वाले साधन के साथ ही एक उद्योग का दर्जा प्रदान किया जाना, निवेश के लिए पर्यटन को प्राथमिकता वाला क्षेत्र बनाना, पर्यटन के विकास के लिए राज्य स्तर की योजनाओं को विकसित करना और पर्यटन के क्षेत्र में अन्तर्क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देना। नवीं एवं दसवीं पंचवर्षीय योजना सरकारों की अस्थिरता के कारण लम्बित रही। 11 वीं पंचवर्षीय योजना में अवश्य ही पर्यटन उद्योग को विकसित करने के सकारात्मक कदम उठाये गये थे और अब वर्तमान में 12वीं पंचवर्षीय योजना में आशा की जा सकती है निकट भविष्य में पर्यटन उद्योग पर इन योजनाओं का अनुकूल प्रभाव देखने को मिलेगा।

राज्य सरकार ने पर्यटन को प्रमुख व्यवसाय के रूप में विकसित करने हेतु 'राज्य पूंजी निवेश उपादान योजना' को भी स्वीकृति प्रदान की हुयी है। इसके अर्न्तगत पर्यटन इकाइयों को उनकी परियोजना लागत की 15 प्रतिशत अथवा 7.50 लाख रुपये, जो भी कम हो, राज्य सहायता के रूप में प्रदान किया जा रहा है। पर्यटन उद्योग के विकास के लिये राज्य सरकार द्वारा किये जा रहे उपरोक्त प्रयास तो यहां सिर्फ उदाहरण के लिये दिये गये हैं। इनके अतिरिक्त भी अनेकों ऐसी योजनाएं हैं जो कि प्रदेश के पर्यटन उद्योग को विकसित करके देश एवं विदेश में लोकप्रिय तो करेंगी ही साथ ही केन्द्र एवं राज्य

सरकारों के लिये राजस्व प्राप्ति का एक सुदृढ़ माध्यम भी बनेंगी।

पिछले कुछ समय से राज्य में पर्यटन के क्षेत्र में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। दसवीं योजना के दौरान राज्य में पर्यटकों की संख्या में 78 प्रतिशत की वृद्धि हुई और विदेशी मुद्रा में भी 120 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी। फिक्की द्वारा कराए गए हाल के एक अध्ययन के अनुसार पर्यटन में वर्तमान में रोजगार और निवेश का अनुपात सबसे अधिक है। इस क्षेत्र में करीब 10 करोड़ रुपये के निवेश पर लगभग 475 नौकरियों के सृजन की क्षमता आंकी गयी है। अध्ययन में कहा गया कि प्रत्येक नौकरी के कारण इससे संबंधित अन्य क्षेत्रों में लगभग 77 और नौकरियां उपलब्ध हो रही हैं। निश्चय ही यह सुखद संकेत है।

भारत को दुनियाभर के पर्यटकों की पहली पसंद वाला देश माना गया है। भारत ने पसंदगी जानने के लिए तय सभी 10 कैटेगिरियों में 89 से ज्यादा अंक हासिल किए। भारतीय संस्कृति को सर्वे में 100 में से 97.17, पैसे वसूली के तहत 100 में से 94.78, और विधिता में 86.30 अंक मिले। स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय पर्यटन की इन विशेषताओं ने ही इसे विश्व के सबसे अधिक पसंदीदा देशों में सम्मिलित किया है। विशेष बात यह भी है कि भारतीय पर्यटन की विविधता में यहां के राज्यों में छिपी हमारी अनमोल संस्कृति ही है जिससे यहां अब अधिकाधिक पर्यटक आना पसंद करते हैं।

वर्तमान समय में देखा जाये तो उत्तर प्रदेश का पर्यटन उद्योग निरन्तर विकास के मार्ग पर अग्रसर है। यहां के लगभग हर बड़े शहर में क्षेत्रीय पर्यटन कार्यालय स्थापित हैं जो कि अपने–अपने क्षेत्र की पर्यटन क्षमताओं को उजागर करने में व्यस्त हैं। प्रदेश के पर्यटन उद्योग को बढ़ाने के लिये न केवल यहीं पर्यटन कार्यालय खोले गये हैं अपितु राज्य के बाहर अन्य छः स्थानों दिल्ली, चण्डीगढ़, अहमदाबाद, कलकत्ता, मुम्बई एवं चेन्नई में भी उत्तर प्रदेश के पर्यटन विभाग स्थित हैं जो कि अपने विभिन्न क्रियाकलापों द्वारा अन्य राज्यों में उत्तर प्रदेश के पर्यटन का प्रचार एवं प्रसार करने में जुटे हुए हैं।

उत्तर प्रदेश के पर्यटन उद्योग के विकास की सम्भावनायें

उत्तर प्रदेश पर्यटन की दृष्टि से एक अत्यधिक महत्वपूर्ण राज्य माना जा सकता है। यहां की सुदृढ़ संस्कृति, अनूठी कला, गौरवमय इतिहास, यहां की स्वस्थ परम्पराएं, भौगोलिक विविधताएं आदि पर्यटकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने की पूरी क्षमता रखते हैं। पर्यटकों को देने की दृष्टि से यहां इतनी अधिक क्षमतायें है जिसकी एक पर्यटक कल्पना भी नहीं कर सकता है।

पर्यटकों के दिलों–दिमाग पर सेवा, सहयोग, सद्विचार, समर्पण, सद्कर्म और श्रेष्ठ संस्कारों की सात्विक भावनाओं को विकसित करने वाले धार्मिक पर्यटन के उन्नयन की भी यहां अकूत संभावनाएं मौजूद हैं क्योंकि यहां पर धर्मावलम्बियों के लिए अनेकों मन्दिरों, मस्जिदों, गिरजाघरों, दरगाहों व गुरुद्वारों की लंबी कतारें विद्यमान हैं।

पर्यटन के बढ़ते महत्व को देखते हुए इसकी समस्याओं के अविलम्ब समाधान के लिये पर्यटन मंत्रालय द्वारा अनेक प्रयास किये जा रहे हैं, जिसके निकट भविष्य में अच्छे परिणाम प्राप्त होने की संभावना है। होटलों की कमी को देखते हुए निजी उद्यमियों की भागीदारी से नये होटलों के निर्माण पर बल दिया जा रहा है। इस सम्बन्ध में अनेक विदेशी होटल श्रृंखलाओं व अप्रवासी भारतीयों के साथ मिलकर युद्ध स्तर पर होटल निर्माण के कार्य को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

यातायात व्यवस्था में सुधार की दृष्टि से हवाई अड्डों के विस्तार और आधुनिकीकरण, विमान सेवाओं की संख्या में वृद्धि, सड़क और रेल परिवहन आदि के विस्तार के सम्बन्ध में अनेक नीतिगत निर्णय लिये गये हैं।

विगत तीन दशकों से तीव्र गति से पर्यटन उद्योग का महत्व बढ़ रहा है तथा आने वाले समय में यह विश्व का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्यम होगा। अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम इस उद्योग के महत्व को समझें। जहां तक पर्यटन की दृष्टि से उत्तर प्रदेश का प्रश्न है यह बात निःसन्देह कही जा सकती है कि यहां पर पर्यटन विकास की व्यापक संभावनाएं हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम इस उद्योग में आने वाली कठिनाइयों पर गंभीरतापूर्वक विचार कर उन्हें दूर करने का प्रयास करें। आवश्यकता पर्यटन के सम्बन्ध में सही दिशा–निर्देशन व नीति–निर्माण की है। आवश्यकता 'पर्यटकों का स्वर्ग–भारत' के सपने को साकार करने की है।

उत्तर प्रदेश के पर्यटन उद्योग में रोजगार की स्थिति

पर्यटन उद्योग एक विस्तृत उद्योग है। इसे संचालित करने में प्रत्यक्ष रूप से भले ही कुछ ही व्यक्ति दिखायी देते हों परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से न केवल पर्यटन स्थल के समीप के लोग अपितु अन्य क्षेत्रों के लोगों का भी इसमें अतुलनीय योगदान होता है जो कि इसी उद्योग में लग कर अपनी आजीविका प्राप्त कर रहे हैं।

पर्यटन उद्योग एक सेवा क्रिया भी है। इसमें बहुत बड़ी संख्या में विभिन्न प्रकार के श्रम का लाभ शासन द्वारा नियुक्त कर्मचारियों को प्राप्त होता है तथा इसी उद्योग में दूसरे के प्रकार लोग भी समाहित होते हैं जो स्वेच्छा से अपनी आय के लिए स्वतंत्र रूप से कार्य करते हुए इसमें अपना योगदान करते हैं। इससे स्पष्ट है कि दो प्रकार के श्रम इसमें लगे हैं. एक जो किसी नियोक्ता अथवा उन बड़े उद्यमियों के के अधीन कार्यरत् हैं जो कि पर्यटन उद्योग में लगे हैं तथा दूसरा वह श्रम जो कि एकांगी अपनी जीविका के उपार्जनार्थ पर्यटन उद्योग में जुटा होता है और इसकी प्रक्रिया का एक अंग बन जाता है।

उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट है कि पर्यटन कार्यालय होटल, पर्यटन एजेन्सी, गाईड, परिवहन के विभिन्न साधन, दुकानदार, बीमा कम्पनियां, सुरक्षा कम्पनियां इत्यादि संस्थानों में कार्यरत् लाखों लोग पर्यटन उद्योग के माध्यम से रोगजार प्राप्त कर रहे हैं।

पर्यटन उद्योग में रोजगार प्राप्त व्यक्तियों का विश्लेषण

पर्यटन उद्योग में व्यक्तियों को सर्वाधिक रोजगार विक्रय कार्य एवं भोजनालय व्यवसाय में प्राप्त है। इन दोनों व्यवसायों में इस क्षेत्र से जुडे कुल व्यक्तियों में से (51.83%) व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त है। इसके विपरीत

पर्यटन एजेन्सी, यात्रा एजेण्टस, सुरक्षा कार्य तथा अन्य कार्यों में मात्र (10.00%) व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त है। शेश (38.17%) व्यक्ति पर्यटन गाइड, होटल उद्योग, परिवहन उ़द्योग, हस्तशिल्प उद्योग तथा प्रचार एवं प्रसार उद्योग में रोजगार प्राप्त कर रहे हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि पर्यटन उद्योग से अर्जित धन कई उद्योगों से अर्जित उद्योगों के समूहों का संगठन होने के कारण एक हाथ में न पहुंचकर कई हाथों में पहुंचता है। इससे एक हाथ में आय का संचयन नहीं हो पाता। राष्ट्र के विभिन्न घटकों में पहुंचने के कारण यह राष्ट्र के विकास में सहायक बनता है। पर्यटक एक स्थान का कमाया पैसा दूसरे स्थान पर खर्च करता है तथा जितने लोगों को यह मिलता है उनकी आय बढ़ती है तथा उनका जीवनस्तर भी ऊपर उठता है। इस प्रकार पर्यटन उद्योग राष्ट्रीय आय के सामाजिक वितरण का एक अत्यन्त उचित माध्यम है।

उत्तर प्रदेश के पर्यटन उद्योग को प्रभावित करने वाले तत्व

पर्यटन एक ऐसा उद्योग है जिसमें प्राकृतिक, मानवीय, तकनीकी, विचारशीलता, ऐतिहासिकता तथा धार्मिकता सम्बन्धी तत्वों का सामंजस्य आवश्यक है। यदि उपरोक्त तत्वों का सामंजस्य बिगड़ता है तो निश्चित रूप से पर्यटन उद्योग प्रभावित होगा। ऐसे अनेकों तत्व होते हैं जो कि पर्यटन उद्योग को विकसित करने में सहायक होते हैं जैसे कि प्राकृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक इत्यादि। इसके अतिरिक्त अनेकों तत्व ऐसे भी होते हैं जिनसे पर्यटन उद्योग विपरीत रूप में प्रभावित होता है जैसे कि सुरक्षा साधनों का अभाव, महंगाई, राजनैतिक अस्थिरता इत्यादि। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से पर्यटन उद्योग को प्रभावित करने वाले तत्वों को मुख्य रूप से दो प्रकार के तत्वों में विभक्त किया जा सकता है– प्रथम, नियन्त्रणीय तत्व तथा द्वितीय, अनियन्त्रणीय तत्व।

नियन्त्रणीय तत्व

पर्यटन उद्योग को प्रभावित करने वाले नियन्त्रणीय तत्व वे होते हैं जिन पर सरकार एवं पर्यटन विभाग द्वारा नियन्त्रण स्थापित किया जा सकता है। ये तत्व निम्न प्रकार हैं–परिवहन के साधन, सांस्कृतिक विकास, सरकारी नीतियाँ, मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता, सुरक्षा, प्रशासनिक व्यवस्था, पर्यटन स्थल पर नियुक्त कर्मचारियों का व्यवहार, धार्मिक स्थल पर धर्म एवं दान के नाम पर लूट–खसोट, क्षेत्रीय पर्यटन विभागों की क्रियाशीलता, पर्यटन स्थल पर किये गये पूंजी निवेश की मात्रा, शिक्षा का प्रसार, प्रचार–प्रसार, सामुहिक छूट का प्रावधान, पर्यटन कार्यक्रमों (टूर्स) का संचालन, पर्यटन स्थलों का सौन्दर्यीकरण, पर्यटन स्थलों पर गन्दगी एवं प्रदूषण आदि।

अनियन्त्रणीय तत्व

पर्यटन उद्योग को प्रभावित करने वाले अनियन्त्रणीय तत्व वे होते हैं जिन पर सरकार एवं पर्यटन विभाग द्वारा नियन्त्रण स्थापित किया जा सकता है। ये तत्व निम्न प्रकार हैं– भौगोलिक संरचना, जलवायु, प्राकृतिक तत्व, आय का स्तर, महंगाई का स्तर, राजनैतिक परिस्थितियाँ, आय का वितरण, ऐतिहासिक प्रसिद्धि, धार्मिक तत्व, विदेशी पर्यटकों का आगमन आदि।

उत्तर प्रदेश पर्यटन उद्योग से सम्बन्धित मानव संसाधन की कार्यदशायें

पर्यटन उद्योग से सम्बन्धित मानव संसाधन की कार्यदशाओं को समझने के लिये दो श्रेणियों में बांटा गया है– सरकारी क्षेत्रों में कार्यरत् मानव संसाधन तथा गैर–सरकारी क्षेत्रों में कार्यरत् मानव संसाधन। जो मानव श्रम सरकारी क्षेत्र से जुडा होता है वह तो संगठित होगा ही, किन्तु गैर–सरकारी क्षेत्र में कार्यरत् मानव संसाधन संगठित भी हो सकता है तथा असंगठित भी। मानव संसाधन को उपरोक्त श्रेणियों में विभक्त करने का मुख्य कारण यह है कि सरकारी तथा गैर–सरकारी मानव संसाधनों की कार्यदशायें तो अलग होती ही हैं साथ ही संगठित एवं असंगठित क्षेत्र के मानव संसाधन की कार्यदशाओं में भी काफी अन्तर पाया जाता है।

उत्तर प्रदेश पर्यटन उद्योग से जुड़े मानव संसाधन को निम्न कार्यदशाओं जैसे कि कार्य के घण्टे, कार्य की पाली, शुद्ध हवा, पानी, प्रकाश एवं स्वच्छता, समय पर पारिश्रमिक भुगतान, पारिश्रमिक सहित अवकाश, मातृत्व अवकाश, कार्य के बीच विश्राम अवकाश, शिक्षा सुविधा, चिकित्सा सुविधा, पदोन्नति, बीमा सुरक्षा, दुर्घटना सुरक्षा, प्रशिक्षण सुविधा, दुर्घटना क्षतिपूर्ति, रोजगार में स्थायित्व, नियोक्ता का व्यवहार, परस्पर सहयोग, नियोक्ता द्वारा शोषण, भविष्य में विकास के अवसर, सरकारी प्रयास इत्यादि के अन्तर्गत कार्य करना पडता है। यें कार्यदशायें इस उद्योग में कार्यरत् मानव संसाधनों के ऊपर अलग–अलग प्रभाव डालती हैं जैसे कि सरकारी क्षेत्र में कार्यरत् व्यक्तियों के ऊपर इनका कुछ प्रभाव पड़ता है तो गैर–सरकारी संगठित एवं असंगठित क्षेत्र के मानव संसाधनों के लिये ये ही कार्यदशायें अलग प्रभाव उत्पन्न करती हैं।

शोध–अध्ययन का उद्देश्य

किसी राष्ट्र के राष्ट्रीय आर्थिक विकास में पर्यटन उद्योग का विशेष महत्व होता है। देश के लाखों लोग प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से इस उद्योग के माध्यम से रोजगार प्राप्त करते हैं। देश को अर्जित विदेशी पूंजी का एक बड़ा भाग पर्यटन द्वारा ही प्राप्त होता है। जो भी राष्ट्र अपने आप में पर्यटन योग्य क्षमता रखता है उसके आर्थिक विकास में पर्यटन उद्योग की एक सशक्त भूमिका होती है। राष्ट्रीय आर्थिक विकास में पर्यटन उद्योग के महत्व का अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि किसी भी पर्यटन स्थल पर इस उद्योग में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उसके लगभग 80ः व्यक्ति जुड़े रहते हैं। इसमें उद्योग एवं श्रम के नये–नये आयाम बनते जाते हैं जिससे अधिक से अधिक लोगों को रोजगार प्राप्त होता है। इसी कारण इसे श्रम नियोजित उद्योग भी कहा जाता है।

पर्यटन उद्योग न केवल राष्ट्रीय आय में वृद्धि का माध्यम है वरन् इसके द्वारा बड़ी मात्रा में रोजगार सृजन किया जाना भी संभव है। उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक महत्व तथा यहाँ के विभिन्न शहरों के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखते हुए यहाँ पर पर्यटन उद्योग के विकास की

असीम संभावनायें दिखायी देती हैं तथा इस क्षेत्र में रोजगार सृजन के भी पर्याप्त अवसर प्रतीत होते हैं। यद्यपि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा इस दिशा में पर्याप्त प्रयास किये भी गये हैं परन्तु अभी भी उत्तर प्रदेश पर्यटन उद्योग की रोजगार उत्पादक क्षमता के पूर्ण विदोहन के लिये बहुत कुछ किया जाना सम्भव है। पर्यटन उद्योग की तीव्र वृद्धि दर तथा इसके विस्तार की असीम संभावनाओं को देखते हुये यह आवश्यक प्रतीत होता है कि भारत सरकार द्वारा पर्यटन उद्योग के निर्बाध विकास के लिये यथासंभव प्रयास किये जायें।

निष्कर्ष

इस प्रकार पर्यटन उद्योग न केवल राष्ट्रीय आय में वृद्धि का माध्यम है वरन् इसके द्वारा बड़ी मात्रा में रोजगार सृजन किया जाना भी संभव है। उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक महत्व तथा यहाँ के विभिन्न शहरों के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखते हुये यहाँ पर पर्यटन उद्योग के विकास की असीम संभावनायें दिखायी देती हैं तथा इस क्षेत्र में रोजगार सृजन के भी पर्याप्त अवसर प्रतीत होते हैं, इसके लिये केवल कुशल नियोजन तथा दृढ़ इच्छा शक्ति की आवश्यकता है। यद्यपि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा इस दिशा में पर्याप्त प्रयास किये भी गये है परन्तु अभी भी उत्तर प्रदेश पर्यटन उद्योग की रोजगार उत्पादक क्षमता के पूर्ण विदोहन के लिये बहुत कुछ किया जाना संभव है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. महन्त जर्नादन; इण्डियन टूरिज्म इन्ड़स्ट्री ऑउटलुक; ग्लोबल विजन पब्लिकेशन, बम्बई; 2005
2. रविन्द्रन, जी0; ह्यूमन रिसॉर्स ड़व्लपमेंट इन टूरिज्म सेक्टर; क्लासिक प्रैस; नई दिल्ली; 2001
3. यादव एवं शर्मा; टूरिज्म एण्ड़ हॉस्पीटिलिटी इन टवन्टी फर्स्ट सेंचुरी; श्री पब्लिशर्स एण्ड ड़िस्ट्रीब्यूटर्स; नई दिल्ली; 2007.
4. खण्ड़ारी एवं शर्मा; टूरिज्म ड़व्लपमेंट–प्रिन्सिपल्स एण्ड़ प्रेक्टिस; श्री पब्लिशर्स एण्ड ड़िस्ट्रीब्यूटर्स; नई दिल्ली; 2004.
5. खण्ड़ारी एवं चन्द्रा; टूरिज्म एण्ड़ सस्टेनेबल डव्लपमेंट; श्री पब्लिशर्स एण्ड ड़िस्ट्रीब्यूटर्स; नई दिल्ली; 2004.
6. शर्मा एवं जैन; रिसर्च मैथोडोलोजी; श्री पब्लिशर्स एण्ड ड़िस्ट्रीब्यूटर्स; नई दिल्ली; 2004.

पत्रिकाएं

7. आउटलुक ट्रैवर्ल्स (मासिक), नई दिल्ली।
8. द ट्रैवर्ल्स एण्ड़ टूरिज्म (त्रैमासिक); सेंटर फॉर टूरिज्म स्ट्डीज, नई दिल्ली।
9. वे टू इण्ड़िया (छमाही); इण्ड़ियन एयरलाइन्स; नई दिल्ली।
10. कॉमर्स (साप्ताहिक); कामर्स पब्लिकेशन लि0, मुम्बई।
11. द इण्डियन जर्नल ऑफ कॉमर्स (त्रैमासिक); वाणिज्य एवं व्यावसायिक प्रशासन संकाय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
12. योजना (मासिक); योजना भवन, नई दिल्ली।
13. द इकॉनोमिक्स टाइम्स (दैनिक); नई दिल्ली।
14. अमर उजाला (दैनिक); मेरठ।
15. दैनिक जागरण (दैनिक); मेरठ।
16. सहारा टाइम्स (साप्ताहिक) आगरा।
17. uptourism.com
18. www.upgov.nic.in
19. www.meerut.nic.in
20. www.agra.nic.in
21. www.mathura.nic.in